DHAYA MINISTRIES

दया ज्योति

''छोटे से छोटा एक हजार हो जाएगा और
सब से दुर्बल एक सामर्थी जाति बन जाएगा''
– यशायाह 60:22

वर्ष – 16 | अक्टूबर – दिसम्बर 2019 | अंक 10 – 12

सम्पादक की हृदय से.....

सर्वसृष्टीकर्ता के नाम से आप सभी को अभिवादन्! 2019 अभी शुरू हुआ है, ऐसा लगता है, लेकिन हम आखीरी माहों में आ गए है। समय अधिक वेग से चला जा रहा है। हम बढ़ते जा रहे है और समय डलता जा रहा है। प्रभु यीशु का आगमन निकट आ गया है और झूठा मसीह प्रकट होने का समय निकट आ गया है। सभी भविष्यवाणी पूरी होती जा रही है। इस्राएला के नेता ने घोषणा कर दिया कि इस्राएल में मंदिर बनेगा।

बाईबल बतलाती है कि आप परमेश्वर के मंदिर हो (1 कुरि. 3:16)। एक ही समय में दो मंदिर को परमेश्वर पृथ्वी पर नही रखेगा। एक मंदिर उठा लिया जायेगा, तब दूसरा मंदिर पृथ्वी में विराजमान रहेगा। पृथ्वी भर में नजर डाले तो स्पष्ठ होता है कि मंदिर का कार्य अति तीव्रता से इस्राएल अंजाम देने जा रहा है। इस से यह समझ आता है कि प्रभु यीशु का गुप्त आगमन निकट आ गया है। आखीरी नरसिंगे फूँकने के लिये स्वर्गदूत तैयार है उसके इशारे को देख रहे है। जब परमेश्वर आदेश देगे तब वे तुरन्त तुरही फूँक देगें।

स्वर्गदूत तुरही फूँकने से पहले आप सुसमाचार की तुरही को पृथ्वी भर में फूँकना पड़ेगा। ''राज्य का सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा'' (मत्ती 24:14)। एक भविष्यवाणी सिर्फ बाकी है, जिसे हमें मिलकर पूरा करना है। प्रभु यीशु की राज्य की सुसमाचार की तुरही को फूँकना है। इस तुरही को क्या आप हमारे संग मिलकर फूँकना चाहते है? तो सादर आमंत्रित है, क्रिस्मस के पर्व के माह में 50 स्थानों पर राज्य का सुसमाचार सुनाने की योजना बनाई गई है। इस योजना में आप भी हमारे संग मिलकर सुसमाचार की तुरही फूँक सकते है।

राज्य की सुसमाचार की तुरही फूँकने के लिये प्रत्येक स्थलों के लिये खर्च रू.5000/- आयेगा। आप हर्ष से देकर 50 स्थलों में राज्य की सुसमाचार की तुरही फूँकवा सकते है। जिसका खुल खर्च रू. 2,50,000/- आयेगा। दो तो दिया जायेगा, जिस नाप से तोलते हो उसी माप से तोला जायेगा। हर्ष से देने वाले से परमेश्वर प्रिय रहता है (2 कुरि. 9:7)। बीज बोने वालो को बीज दिया जाता है कि वे बीज बोये। जितना बीज बोते हो उतना ही काटोगे। सभोपदेशक लिखने वाले ज्ञानी कहता है, ''अपनी रोटी जल के ऊपर डाल दे, क्योंकि बहुत दिन के बाद तू उसे फिर पाएगा'' (11:1)। प्रभु की राज्य की सुसमाचार के लिये व्यय करनेवाला कभी दरित्रत नही हुआ है। इसलिये प्रभु की राज्य की सुसमाचार की तुरही फूँकने में सहायता करें। निश्चय उसका प्रतिफल आप पायेंगे।

दया सेवकाई अपने दर्शनों में आगे बढ़ते जाने के लिये लगातार प्रार्थना एवं सहायता करते रहें। प्रभु परमेश्वर आप सभी के संग बने रहने और आपकी सुरक्षा और परिवार में शान्ति बनायें रखने के लिये निरन्तर प्रार्थना करते रहते है। आमीन्।

प्रभु यीशु की सेवा में

आपका प्रिय भाई आलफ्रेड डेनियल

''तेरी करूणा जीवन से भी उत्तम है'' - भजन 63:3

जीवन के प्रति स्वप्न (दर्शन)

भाई आलफ्रेड डेनियल

जीवन महत्वपूर्ण है। जिसे परमेश्वर ने प्रदान की। सर्वसृष्टीकर्ता ने सारी भूमण्ड की सृष्टी अपने वचन के मात्र से बनायी और अपने स्वरूप में, समानता में नर और नारी बनाया। परमेश्वर के पास जीवन था और उसने जीवित प्राणी बना दी। जीवन आप ने नही बनाई है, माता–पिता आप ने नही चुना है। जिस स्थान में रहना, जीना, कार्यशैली करना आप ने नही चुना है। इसे नियुक्त करने वाला परमेश्वर है। यहां तक आपका शरीर भी आपका नही है, जिसे आप अपना समझते है। आपका शरीर, जीवन, माँ–बॉप, परिस्थितियों को भी परमेश्वर ने आपके लिये नियुक्त कर रखा है। इसलिये आप अपने जीवन और शरीर के स्वामी नही है। इसे ध्यान रखकर जीवन जीये। आप अपने जीवन या शरीर को नही बना सकते और न इसे घात या नष्ट करने का अधिकार आपके पास है। इसे समझकर जीवन निर्वाहन करें। इसे बनाने वाले परमेश्वर के पास मात्र अधिकार है कि इसे बनाये या नष्ट करें, इसलिये उसी से डरें (लूका 12:5)।

जीवन सही तरह से जीने के लिये आपके पास स्वप्न/दर्शन होना चाहिये, तब ही आप ढ़ंग से चल सकते है। यदि आपके जीवन के प्रति स्वप्न/दर्शन न रहें, तो आप हताश हो जायेंगें, और लक्ष्य के बिना तीर मारने वाले व्यक्ति रहेंगे, जो हवा में तीर चलाता है। स्थान छोड़कर घूमनेवाला मनुष्य उस चिड़िया के समान है, जो घोंसला छोड़कर उड़ती फिरती है (नीति.27:8)। इसलिये आपके पास स्वप्न/दर्शन आवश्य होनी चाहिये, अन्यथा आप बिना लक्ष्य या उद्देश्य के रहेंगे। यदि आपके पास जीवन के प्रति स्वप्न नही है, तो आप परमेश्वर से माँगे, क्योंकि यीशु ने कहा – ''माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा''.....''जो कोई माँगता है, उसे मिलता है'' (मत्ती 7:7,8)। इस संसार में अनेक वस्तुऐं माँगते है, और पाते भी है। लेकिन क्या अपने कभी जीवन के प्रति स्वप्न को परमेश्वर से माँगा है? यदि नही माँगा है, तो परमेश्वर से माँगें, वह आपको जीवन के प्रति स्वप्न/दर्शन देयेंगें।

परमेश्वर ने हरेक व्यक्ति को विशेष उद्देश्य से बनाया है। जिस उद्देश्य से उसने बनाया है, उसे प्रकट करना भी उसी का काम है। इसलिये परमेश्वर स्वप्न या दर्शन के माध्यम से उसे प्रकट करता है। जब तक दर्शन/स्वप्न नही मिलेगा तब तक आपको उसके प्रति भोज नही होगा। बिना भोज के आप कार्य नही कर सकेंगे। आज बहुत से जन अपने दायित्व को बिना जाने जीवन जी रहे है। जिसके कारण से उनके अन्दर, परिवार, सेवकाई एवं कार्यक्षेत्रों में आगे बढ़ नही पा रहे है। इसलिये जीवन, परिवार, बच्चे, दायित्व, सेवकाई, आत्माओं और देश के प्रति दर्शन/स्वप्न आवश्य मिलना चाहिये। जिनके पास जीवन के प्रति दर्शन/स्वप्न नही है, उनके जीवन में कोई भी रूकावटें नही आती। उन्हें जीवन में संघर्ष का सामना नही करना पड़ता।

आपको दर्शन/स्वप्न ही प्रोत्सहित करती है कि आप अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ें। माता–पिता को भी अपने बच्चों के प्रति दर्शन/स्वप्न होनी

चाहिये। तब ही वे अपने बच्चों को प्रेरित कर पायेंगे और प्रार्थना कर अपने बच्चों की मार्ग दर्शन करने में मद्द कर पायेंगे। जॉन वैसली की माता सूसनना वैसली ने अपने बच्चों के लिये निरन्तर प्रार्थना करती रही कि उनके बच्चे समुद्धाय, देश एवं कलीसियाओं के लिये आशीष का कारण बनें। उनकी प्रार्थना और मार्गदर्शन के कारण उनके बच्चे देश, समुद्धाय, कलीसिया एवं सेवकाई के लिये आशीष के कारण बन पाये। जॉन वैसली ने मैथोड़िस चर्च के संथापना किया और कलीसियाओं के लिये जागृति के कारण बनें। आज मैथोड़िस चर्च दुनिया भर में फैली हुई है। जिसका योगदान उनकी माता सूसनना वैसली ही को जाता है। इसी प्रकार आप अपने बच्चों को प्रोत्सहित के साथ प्रार्थना के संग मार्गदर्शन करें ताकि आपके बच्चें के द्वारा समुद्धाय, देश, कलीसिया, सेवकाई आशीषित हो जाये।

दर्शन/स्वप्न देखकर कार्य करने वालो को अनेक संघर्ष का सामना करना पड़ता है। आने वाले संघर्ष से आपका मन अताश न हो जाये। क्योंकि स्वप्न/दर्शन देने वाला परमेश्वर आपके संग है। उसने कहा – ''मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा और न कभी तुझे त्यागूगाँ'' (इब्रा. 13:5)। जब सर्वसृष्टीकर्ता परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है, तो आपका मन क्यों विछलीत होता है? प्रतिज्ञा करने वाला 'मनुष्य नही है कि वह झुठ बोले, और न वह मानव है कि मन फिरायें। जो उसने कह दिया, उसे पूरा करने में विश्वास योग्य है। चाहे आप विश्वास योग्य न रहें तब भी परमेश्वर विश्वास येाग्य बन रहता है। सिर्फ आपको दिखाये दर्शन/स्वप्न की ओर पूरे मन एवं तन से आगे बढ़ना है।

आज अनेक सेवक बिना दर्शन से सेवकाई कर रहे है, जिसके कारण से वे सेवा में उन्नति नही देख पा रहे है। सेवा करने वाले सेवक यह जानना है कि परमेश्वर ने उन्हें किस दर्शन के लिये बुलाया है? जब तक वे न जानेगे तब तक वे हवा में तीर चलाने वाले रहेंगे। सेवक एवं विश्वासी स्पष्टता से जानना है कि परमेश्वर ने उन्हें किस संदर्भ से बुलाया है? जब तक वे नही जानेंगे तब तक वे अपनी सेवा एवं जीवन में उन्नति को देख नही पायेंगे। उनको ऐसा लगेगा कि उनकी उन्नति रूकी या ठहर गई है। जिसके कारण से उनको, समुद्धाय या देश को कोई भी लाभ नही। जैसे ठेहरी हुई पानी किसी के लिये भी उपयोगी नही रहती है और उसमें से दुर्गध आती है। वैसे ही सेवक एवं विश्वासीयों का जीवन ठेहरे हुए पानी के समान नही अपितु वे बहने वाले पानी के समान रहना चाहिये अर्थात् नदी का पानी। ताकि आप दूसरों के लिये आशीष एवं उन्नति के कारण बनें।

हबक्कूक नबी की किताब में पढ़ते है ''दर्शन की बात नियत समय में पूरी होनेवाली है, वरन् इसके पूरे होने का समय वेग से आता हैः इसमें धोखा न होगा। चाहे इसमें विलम्ब भी हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहना; क्योंकि वह निश्चय पूरी होगी और उसमें देर न होगी'' (2:3)। दर्शन/स्वप्न उपयुक्त समय के लिये दिया गया है। इसे समझकर आप को बढ़ना है। वह आपके जीवन, परिवार, कार्यक्षेत्र, सेवकाई और बच्चों के द्वारा पूरा किया जायेगा। जिस से समुद्धाय, परिवार, कलीसिया और देश आशीषित होगी।

भारत देश के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलम जी ने कहा – 'स्वप्न देखों'। उन्होंने अपने जीवन के बारे में स्वप्न देखा कि वैज्ञानिक बनें, लेकिन वह बहुत गरीब घर से थे। इसलिये वह सुबह उठकर अक़बार (पेपर) डालने जाया करते थे। उनका परिवार उन्हें वैज्ञानिक बनाने के लिये सक्षम नही था। लेकिन उनके कठोर परिश्रम से वह अपने स्वप्नें को पूरा

किया। इसलिये उन्होने कहा – 'स्वप्न देखों'।

जब एक व्यक्ति अपने जीवन में स्वप्न देखता है तो उसके अंदर में उमग पैदा होता है और उसके जीवन के प्रति उद्देश्य मिला जाता है कि उसे आने वाले दिनों में क्या करना है ? क्या बनना है ? जब तक उसके जीवन में स्वप्न न रहें, तो वह उसके प्रति कैसे जिज्ञासी होगा ? सिर्फ स्वप्न देखना प्रयाप्त नही लेकिन उसके प्रति आशा रखना चाहिये। अगर स्वप्न के प्रति आशा नही है तो उसे आप पूरा नही कर पाऐंगे।

बाईबल में पढ़ते है ''यूसुफ ने एक स्वप्न देखा, और अपने भाइयों से वर्णन किया; हम लोग खेत में पूले बाँध रहे हैं, और क्या देखता हूँ कि मेरा पूला उठकर सीधा खड़ा हो गया; तब तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारों तरफ से घेर लिया और उसे दण्डवत् किया'' (उत्पत्ति 37:6,7)। उसके स्वप्नों और उसकी बातों के कारण उसके भाई लोग यूसुफ से और भी अधिक बैर करने लगे और जब यूसुफ के भाइयों को मौका मिला, तो उसे उठाकर गड़हे में डाल दिया। वह गड़हा सूखा था और उसमें कुछ जल न था। इतना ही नही यूसुफ को गड़हे से निकाल कर मिद्यानी व्यापारी इश्माएलियों के हाथ चाँदी के बीस टुकड़ों में बेच दिया। मिद्यानियों ने यूसुफ को मिस्र में ले जाकर पोतीपर नामक फ़िरौन के एक हाकिम और अंगरक्षकों के प्रधान के हाथ बेच डाला। पोतीपर के घर में यूसुफ गुलाम बनकर सेवा टहल करने लगा। पोतीपर की पत्नी के द्वारा झुठा आरोप लगाने से यूसुफ को बन्दीगृह में डाला गया। उसी बन्दीगृह में मिस्र के राजा के पिलानेहारे और पकानेहारे ने अपने स्वामी के विरुद्ध कुछ अपराध करने से डाले गये। एक ही रात में वे दोनों ने स्वप्न देखा, जिसके कारण से वे उदास थे। उन्हें उदास देकर यूसुफ ने उन से पूछा, ''आज तुम्हारे मुँह क्यों उदास है ?'' उन्होंने उससे कहा, ''हम दोनों ने स्वप्न देखा है'', जिसका अर्थात् बतानेवाले कोई भी नहीं'' (उत्पत्ति 40:7,8)। अगर आप यूसुफ के स्थान में रहते तो क्या कहते ? मैंने भी स्वप्न देखकर अपने भाइयों से कहा, जिसके कारण से मैं यहां पर कष्ट झेल रहा हूँ। स्वप्नों को अधिक महत्व न दें।

यूसुफ अपने देखे हुए स्वप्न पर आशा रखा था, इसलिये यूसुफ ने राजा के पिलानेहारा और पकानेहारा से कहा, ''क्या स्वप्नों का फल कहना परमेश्वर का काम नहीं है ? (उत्पत्ति 40:8) अगर यूसुफ को अपने स्वप्नों के प्रति आशा नही होती तो वह स्वप्नों को तृष्कृत कर देता। लेकिन यूसुफ ने स्वप्नों को तृष्कृत नही किया अपितु उसने कहा, 'स्वप्नों का फल कहना परमेश्वर का काम है'। यूसुफ का यह उत्तर स्पष्ट करता है कि यूसुफ को स्वप्नों के प्रति आशा थी, कि निश्चय मेरा स्वप्न पूरी होगी। इस प्रकार की आशा एवं निश्चय आपके स्वप्नों/दर्शनों के बारे में रहनी चाहिये, जैसे यूसुफ को थी।

स्वप्न/दर्शन के प्रति आशा रहना प्रयाप्त नही उसके लिये कठोर परिश्रम करना चाहिये। आपका स्वप्न/दर्शन जीवन के उद्देश्य को बतलाती है लेकिन उसके लिये आपको कठोर परिश्रम करनी चाहिये। बाईबल बतलाती है, ''जहाँ दर्शन (स्वप्न) की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते है'' (नीति. 29:18)। शाऊल के बारे में नया नियम में पढ़ते है, ''प्रभु यीशु मसीह के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था, महायाजक के पास गया और इस अभिप्राय की चिट्ठियाँ माँगी कि क्या पुरूष क्या स्त्री को बांधकर यरूशेलम ले आए। वह चलते–चलते दमिश्क के निकट पहुँचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी, और भूमि पर गिर पड़ा और यह शब्द सुना, ''हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है ?'' उसने पूछा, ''हे प्रभु, तू कौन है ?'' उसने कहा, ''मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है। परन्तु अब उठकर नगर में जा,

और जो कुछ करना है वह तुझ से कहा जाएगा।'' दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेला था, उससे प्रभु ने दर्शन में कहा, ''वह तो अन्यजातियों और राजाओं और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रगट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है। और मैं उसे बताऊँगा कि मेरे नाम के लिये उसे कैसा दुःख उठाना पड़ेगा'' (प्रेरित.9:15,16)। प्रभु ने शाऊल को दर्शन दिया कि उसे परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार सुनाने के लिये कितना कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। स्वप्न/दर्शन देखना प्रयाप्त नही उसे पाने के लिये आशा के संग कठोर परिश्रम करना अत्यंत जरूरी है। तब ही दर्शन या स्वप्न के प्रति अग्रसर हो पायेंगे। जैसे शाऊल (पौलुस) ने दर्शन पाकर कठोर परिश्रम किया, वैसे ही दर्शन एवं स्वप्न रखने वाले अपने स्वप्न एवं दर्शन को पूरा करने के लिये कठोर परिश्रम करेंगे, तो ही आप देखने वाले दर्शन या स्वप्न को पूरा कर पायेंगे।

स्वप्न या दर्शन देखना ही नही, उस पर आशा रखते हुए कठोर परिश्रम करना ही प्रयाप्त नही उसके संग अनुशासन का जीवन जीना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा आपका ध्यान भंग/भटक सकता है। अगर आपका ध्यान भटक जाये, तो आप अपने दर्शन या स्वप्न पूरा नही कर सकेंगे। आपके स्वप्नों को रोकने के लिये आकृर्षण/अभिलाषा, आपको आकृषित करेगी। लेकिन उन सब पर जय प्राप्त कर अपने स्वप्नें की ओर आगे बढ़ना चाहिये। जैसे यूसुफ को पोतीपर की पत्नी ने अपनी मोह माया की जाल में फँसाने और अपनी अभिलाषों को पूरा करने के लिये उसको आकृषित कर उसका वस्त्र पकड़कर कहा, ''मेरे साथ सो'' पर वह अपना वस्त्र उसके हाथ में छोड़कर भागा और बाहर निकल गया (उत्पत्ति 39:12)। उसका अनुशासन का जीवन ही उसको स्वप्न पूरा करने में मद्द की। यदि परिस्थिति आपके स्वप्नों/दर्शनों के विपरित भी क्यों ने हो? तब भी आप अनुशासन का जीवन जीयेंगे तो आप स्वप्नों को पूरा करने के लिये आगे बढ़ रहे है; इसे याद रखें।

जो स्वप्न पूरा करने के लिये अनुशासन का जीवन जीता है, उसकी मद्द परमेश्वर करता है। अगर आप ने स्वप्न देखकर उस पर आशा के संग कठोर परिश्रम करते हुए अनुशासन का जीवन जीते है, तो परमेश्वर आपकी मद्त करने के लिये तैयार रहता है। परमेश्वर की मद्द बगैर आप अपना स्वप्न या दर्शन पूरा नही कर सकते है। परमेश्वर उनकी मद्त करता है जो निशाने की ओर संयम से दौड़ा चला जाता है ताकि अपना दर्शन या स्वप्न पूरा करें। यूसुफ संयम से दौड़ते हुए देखकर परमेश्वर ने फिरौन को स्वप्न दिया, जो आने वाले समय काल में होने वाला था। लेकिन कोई भी विद्वानों, पंड़ितों, ज्योतिष्यों ने स्वप्नों का अर्थात् बता न पायें। तब यूसुफ को बुलाया गया और राजा फिरौन के सामने खड़ा किया गया, ताकि वह स्वप्नों का भेद बतायें। भेद बताने में परमेश्वर ने यूसुफ की मद्द की। जिसके कारण यूसुफ मिस्र का प्रधान मंत्री बनाया गया। यूसुफ ने फ़िरौन के स्वप्नें का भेद बताने के अनुसार सात वर्ष बहुतायत की उपज उगी उसके पश्चात् सात वर्ष अकाल की घड़ी आई। सारी पृथ्वी के लोग मिस्र में अन्न मोल लेने के लिये यूसुफ के पास आने लगे। यूसुफ के भाई भी अन्न खरीदने के लिये मिस्र में आकर यूसुफ के सामने दण्डवत् किया। तब यूसुफ को अपने स्वप्नों को स्मरण आया जो उसने उनके विषय में देखी थी (उत्पत्ति 42:6,9)। परमेश्वर ने यूसुफ के स्वप्नों को पूरा किया। उसी प्रकार से आप देखने वाले जीवन के प्रति स्वप्नों/दर्शनों को पूरा करने के लिये प्रभु तैयार है। लेकिन क्या आप देखने वाले स्वप्नों/दर्शनों पर आशा रखते हुए कठोर परिश्रम के संग अनुशासन के साथ आगे बढ़ेंगे? तो परमेश्वर निश्चय ही आपकी मद्द करेंगा। आमीन्।

प्रश्नावली – 20 के उत्तर

1) पूरे आनन्द की बात समझो – याकूब 1:2, 2) परमेश्वर से माँगे – याकूब 1:5, 3) परीक्षा, खरा, जीवन का वह मुकुट – याकूब 1:12, 4) ज्योतियों के पिता – याकूब 1:17, 5) जीभ – याकूब 1:26, 6) कंगालों को – याकूब 2:5, 7) विश्वास, कर्म, मरा – याकूब 2:17, 8) मरी, कर्म, मरा – याकूब 2:26, 9) जीभ – याकूब 3:8, 10) पवित्र – याकूब 3:17, 11) परमेश्वर से – याकूब 4:4, 12) शैतान भाग – याकूब 4:7, 13) वह तुम्हें शिरोमणि – याकूब 4:10, 14) अय्यूब, प्रभु, जो उसका प्रतिफल – याकूब 5:11, 15) पापी को फेर, मृत्यु – याकूब 5:20

बाईबल प्रश्नावली – 21

सभी प्रश्न 1पतरस की पत्री से लिये गये है। इन प्रश्नों का उत्तर, अध्याय एवं आयत की संख्या के संग 20 दिसंबर से पहले लिखकर भेजें।

1. यीशु मसीह के प्रगट होने पर.....और.....और.....का कारण ठहरे।
2. किन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखते है ?
3. तुम्हारा छुटकारा.....अर्थात्.....के द्वारा नहीं हुआ।
4. प्राणी किसके समान है ?
5. नये जन्मे बच्चे किसकी लालसा करते है ?
6. तुम.....हुआ.....और.....और.....और.....हो।
7. किसे से डरो ?
8. वह.....सुनकर.....नहीं देता।
9. परमेश्वर की दृष्टि में किसका मूल्य बड़ा है ?
10. तुम किस लिये बुलाए गए हो ?
11. वह.....भाव से तो.....किया गया।
12. पानी का दृष्टान्त क्या दिखाता है ?
13. किसके लिये सचेत रहना है ?
14. कौन पहले न्याय किये जाये ?
15. किस से कमर बाँधना है ?

Vandavasi,Thiruvanamalai Dt, (T. N.)

Fasting Prayer and Sunday Worship C.S.I., Church, Munnar, Kerla

Family Counseling Time, Gujarat

Sathiyam T.V. Fasting Prayer (T.N.)

Baptist Church, Kolathur, Chennai, (T.N.)

Family Counseling Book Dedication, and preached at Christ Church, Bhopal (M.P.)

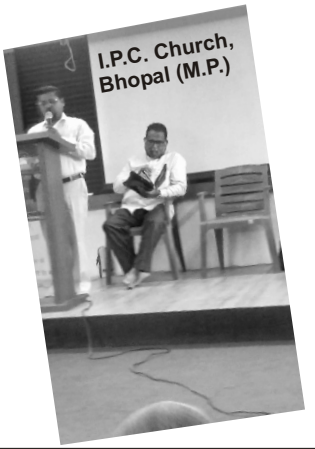

Asha AG Church Bhopal (M.P.)

Chattisgarh Mission Fields

Kanchipuram Dt,(T.N)

V.B.S - Mansoor, (M.P.)

Children Retreats,
Udankudi (T.N.)

C.S.I. Church, Toothukudi (T.N.)

Counseling for B.Ed Training Students

Counseling & Prayer for Youth Girls,
Meighanapuram (T.N.)

Special Meeting at North Athur, C.S.I. Church, (T.N.)

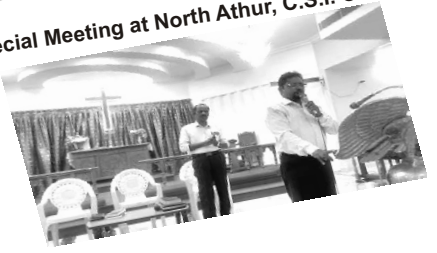

CSI Church, Kailapatanam (T.N.)

CSI Church, Vilikudi (T.N.)

प्रार्थना का विषय

1. देश में से मूर्तिपूजा जड़ से समाप्त होने के लिये प्रार्थना करें।
2. न्यायालायें के जज़ इमानदारी एवं सत्य के संग पीढ़ित जनों का न्याय करने के लिये प्रार्थना करें।
3. रेल मार्ग, हवाई मार्ग, सड़क मार्ग और जल मार्ग से यातायत करने वाले सभी यात्रीयों की सुरक्षा के लिये प्रार्थना करें।
4. क्रिस्मस प्रोग्राम के द्वारा चलने वाली सेवकाई बिना रूकवाट से होने, और उसमें भाग लेने वाले प्रभु यीशु मसीह के प्रेम को जानने के लिये प्रार्थना करें।
5. खेल–कूद से जुड़े खिलाड़ीयों की सुरक्षा, आरोग्यता, उन्नति और उद्धार के लिये प्रार्थना करें।
6. तंत्रिक, जादू–टोनाऐं भावी कहने वाले, पुजारी एवं साधु–संतो के मन परिवर्तन होने और वे सब सत्य को पहचाने के लिये प्रार्थना करें।
7. पत्रिका एवं लेखन कार्यों करने वालों की सुरक्षा, उन्नति, आर्थीक जरूरतें पूरी होने एवं प्रभु की मार्गदर्शन मिलती रहने के लिये प्रार्थना करें।
8. नई दिल्ली, मंबई, कोलकोता, चेन्नई, बैगलुरू की सुरक्षा बनी रहने के लिये प्रार्थना करें।
9. गोवा, पंजाब, हरियाण, जम्मु–कश्मीर, बिहार में सुसमाचार फैलने के लिये प्रार्थना करें।
10. देश भर से भ्रष्टाचार जड़ से समाप्त होने के लिये प्रार्थना करें।
11. देश भर के अधिकारी, राजनेता एवं उच्च क्षेणी में कार्यारत् इमानदारी, निष्कपट, बिना स्वार्थ से और बिना किसी भेद भाव से लोगों की सेवा करने के लिये प्रार्थना करें।
12. भारत देश के हरेक राज्यों में सुरक्षा बने रहने के लिये प्रार्थना करें।
13. अमेरिका, अफ्रिका, एशिया, आस्ट्रेलिया, यूरोप में रहने वालों के बीच में शांति एवं आशीष बनी रहने के लिये प्रार्थना करें।

अवसर को बहुमूल्य समझो

बहन ज्योस्फीन डेनियल

समय काल परमेश्वर के हाथ में है। परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये हरेक समय काल सुनिश्चित कर रखा है। जन्म का, और मरन का। यहोवा परमेश्वर ही मारता है और जिलता भी है। लेकिन वह अनुग्रह करनेवाला है। मनुष्य अपने समय काल में बिताने वाला या अनुभव करने वाला सब व्यर्थ है (सभो.1:3)। सभोपदेशक लिखने वाले ने लिखा है,''मैंने उन सब कामों को देखा जो सूर्य के नीचे किए जाते है; देखो, वे सब व्यर्थ और मानो वायु को पकड़ना है'' (सभो.1:14)। पौलुस ने अपनी पत्री में लिख रखा है; अवसर को बहुमूल्य समझो क्योंकि दिन बुरे है (इफि.5:16)।

समय बड़ी तीव्रता से चला जा रहा है। कुछ ऐसे सोचते है, कि इसका अन्त आते समय देख लेगें या सभी मनुष्यों के समान समय के प्रति अनिश्चित रहते है। कैसे भी चले या रहें ? या कैसे भी कार्य करें ? और जो भी बातें कर रहे है, उन सभी बातों को यहोवा परमेश्वर स्मरण की निमित्त पुस्तक में लिख रखता है (मलाकी 3:16)।

प्रियों ! कुछ लोग कलीसिया में जाते है और समय मिलने पर दूसरों को सुसमाचार सुनाते है, और कुछ पूर्ण रूप से सेवा करने के लिये बुलाहट पाये है। अगर परमेश्वर आज आयेगा या मृत्यु आयेगी, तो कैसी परिस्थिति रहेगी ? अय्यूब की किताब में मनुष्य के दिन मजदूर के समान है (7:1)। मजदूरी करने वाला कार्य समाप्त होने के बाद वह वही खड़ा नही रहता। अपनी मजदूरी प्राप्त करने के बाद वहाँ से जाने की कोशिश करता है। उसी के समान मनुष्य का समय काल किसी के लिये भी इन्तजार नही करता है। मनुष्य का दिन जुलाहे की ढरनी से अधिक फुर्ती से चलनेवाले हैं (अय्यूब 7:6)। जुलाहे की ढरनी से अधिक फुर्ती से चलनेवाले यदि अपनी स्थिति से रूक जायेगी, तो अपनी स्तरता खो बैठेती है।

मनुष्य के दिन छाया के समान है (अय्यूब 8:9)। छाया के बारे में हम अधिक जानते है। जैसे छाया गायब हो जाती है वैसे ही मनुष्य भी गायब हो जाता है।

मनुष्य के दिन हरकारे से भी अधिक वेग से रहता है (अय्यूब 9:25)। हरकारा चिट्ठी देनेवालो को चिट्ठी देकर रूकता नही वह तुरन्त चले जाता है। उसी प्रकार से मनुष्य का दिन रहता है। समय काल के बारे में भजन में भी देखते हैः 1. धूँए के समान है (भजन 102:3)। 2. छाया के समान है (भजन 102:11)। 3. घास के समान है (भजन 103:15)। 4. ढलती हुई छाया के समान है (भजन 144:4)। इसी प्रकार से ढलनी वाली समय मनुष्य पाने के बाद भी अपने स्थिति भुलकर दूसरों के विरोद्ध में कार्य करना एवं बातें करना मनुष्य के स्वभाव में आ गया है।

पृथ्वी भर के राजाओं ने जो ऐश्वर्य अनुभव

नही किया, वह सुलैमान राजा ने अनुभव किया, जो अधिक बुद्धिमान राजा था। उसने सभोपदेशक में साधारण रूप से लिख रखा है, सब कुछ व्यर्थ है। फिर वह लिखता है, मैंने संसार में क्या देखा कि ''न्याय के स्थान में दुष्टता होती है; और धर्म के स्थान में भी दुष्टता होती है''। न्याय का स्थान वह स्थान है जहाँ लोग न्याय चाहते है। धर्म का स्थान वह स्थान है जहाँ लोग धर्म प्राप्त करना चाहते है। लेकिन वहाँ पर भी मैंने दुष्टता देखी।

हाँ, प्रियों! आज संसार में मात्र नही, मसीही परिवारों, कुटुम्बों, घरों एवं कलीसियाओं में भी अन्याय एवं दुष्टता होते हुआ देख पाते है। लेकिन परमेश्वर रखने वाले स्मरण की पुस्तक में सब कुछ स्पष्ठता से लिखा जाता है, इसे मनुष्य स्मरण रखना चाहिये। क्योंकि सुलैमान ने अपने सभोपदेशक की किताब में सूंचित किया है, ''परमेश्वर धर्मी और दुष्ट दोनों का न्याय करेगा'' क्योंकि उसके यहाँ एक एक विषय और एक एक काम का समय है (3:17)। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा (सभो. 12:14)। इसलिये मनुष्यों के लिये आनन्द करने और जीवन भर भलाई करने का सिवाय और कुछ भी अच्छा नहीं (सभो.3:12)।

जो कुछ भी करते है, वह तुरन्त परमेश्वर के स्मरण की पुस्तक में लिखा जाता है। यह सब पहले से ही चले जाने से प्रकाशितवाक्य 22 अध्याय के 12वें वचन में पढ़ते है, ''देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है''। यीशु मसीह आते समय 'हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल उसके पास है' इसका अर्थात् 'हमारे साथ नही'। इसका संदर्भ यह है कि जो कुछ हम करते है, वह तुरन्त परमेश्वर के पास चला जाता है। इसलिये जब यीशु मसीह आते है, तब हमारा प्रतिफल उसके साथ आता है। हमारा प्रतिफल उसके संग आने से पहले, हम कहाँ खड़े है? क्या कर रहे है? जीवन क्यों जी रहे है? इसे हमे अच्छी तरह से जांझकर देखना चाहिये। जैसे सभोपदेशक ने जान, 'जीवन भर भलाई करने का सिवाय और कुछ भी अच्छा नहीं है'। वैसे ही आप भी भलाई करेंगे और परमेश्वर का भय मानकर जीवन जीयेंगे, तो परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का चाहे वे भले हों या बुरी हो न्याय करेगा, तब आप प्रतिफल पाओगे। ''इसलिये जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिये यह पाप है'' (याकूब 4:17)।

हरेक मनुष्य अपने भीतरी जीवन के बारे में अच्छे से जानते है। लेकिन उसे न जाने 'मैं भी परमेश्वर के लिये प्रिय जीवन जी रहा हूँ' अपने को धोखा देगें, तो यीशु मसीह के संग आने वाला प्रतिफल, और अंश निश्चय रूप से दुर्भाग्यपूर्ण रहेगा।

इसे पढ़ने वाले प्रियजनों! अपने आपको जांझकर देखें। पृथ्वी में ऐसे ही आया हूँ और चला जाऊँगा; ऐसे न सोचे.....यही परमेश्वर आपको देने वाला अवसर है। आप अपने आपको धोखा न दें। निश्चय बाईबल सत्य है। निश्चय ही यीशु मसीह आने वाला है या उसके आने से पहले आपका समय काल समाप्त होगा, तो आपके क्रिया के अनुसार प्रतिफल मिलेगा। परमेश्वर न्याय में सब लेकर आयेगा।

प्रियों! अवसर को बहुमूल्य समझो क्योंकि दिन बुरे है। परमेश्वर आपको दिन गिनने की समझ दे और उसको उपयोग करने की अनुग्रह प्रदान करें। आमीन्।

प्रार्थना का विशेष विषय

1. प्रत्येक मिश्न फिल्ड़ों में क्रिस्मस प्रोग्राम करने हेतु रू.5,000/– का खर्च आयेगा। कुल 50 फिल्ड़ों में प्रोग्राम करने की योजना बनाई गई है, जिसका कुल खर्च रू.2,50,000/– आयेगा। सारी जरूरतें पूरी होने के लिये हर्ष से दें और प्रार्थना में थामें।
2. क्रिस्मस भेट के रूप में प्रत्येक मिशनेरी को रू.2,000/– देने की योजना बनाई गई है। कुल 14 मिशनेरी का खर्च रू.28,000/– आयेगा। यह जरूरतें पूरी होने के लिये अपना हाथ बढ़ाये और प्रार्थना करें।
3. प्रोग्राम संचालित करने वाले स्थालों में अच्छा मौसम, वातावरण, सुरक्षा बनें रहने के लिये प्रार्थना करें।
4. इन प्रोग्राम के मध्यम से अनेक नये आत्माओं को जीतने के लिये प्रार्थना करें।
5. क्रिस्मस प्रोग्राम में परमेश्वर का अनुग्रह एवं मनुष्य की दया मिलने के लिये प्रार्थना करें।

इन सभी प्रार्थनाऐं एवं जरूरतों को पूरी करने के लिये आप सभी हर्ष से योगदान करें ताकि हम सब मिलकर परमेश्वर की राज्य को विस्तार कर सकें। आपकी अनुदानों को बैकों द्वारा भेज सकते हैः–

Dhaya Ministries & Charitable Trust

Online Banking ⇨

Union Bank of India
A/c No.527102010312844
Branch - St. Joseph, Bhopal (M.P.)
IFS Code : UBIN0552712

Or

State Bank of India
A/c No.30916103538
Branch - Purasawalkam, Chennai (T.N.)
IFS Code : SBIN 0001515

Address: T8/510, Sagar Lake, View Homes, Ayodhya Bye Pass Road, Piplani Post, Bhopal (M.P.) - 462022.

पुस्तक मौजूद है

1. '**परिवारिक जीवन की मधुर रहस्य**' – यह पुस्तक परिवार के सलाह पर आधरित लिखी हुई है। जिसके द्वारा आपका परिवार आशीषित हो और आपका परिवारिक जीवन मधुर के संग रहने के लिये उपयोगिक है। इसका मूल्य मात्र रू.25/– है।

2. '**गीत की किताब**' – इस पुस्तक में 150 गीत, 100 स्तुति, 11 विशेष प्रार्थना, 25 प्रतिज्ञा और प्रत्येक दिन बाईबल ध्यान करने वाला पाठ भी संग्लन है। इसका मूल्य मात्र रू.50/– है।

यदि आप पुस्तकें प्राप्त करना चाहते है तो पुस्तकें के मूल्य संग पोस्ट का खर्च रू.50/– भेजे। इसका मूल्य मनीआर्डर या डी.डी./ चेक/ ऑन लाईन DHAYA MINISTRIES & CHARITABLE TRUST बैक के नाम से भेजकर पुस्तक प्राप्त कर सकते है।

मिश्न समाचार

स्तुति का विषय

1. मोती लाल और तमेश्वर पहले विरोध करते थे, परमेश्वर ने उनके मन को बदल दिया। अब वे विश्वास करने लगे है।
2. बिन्नू भाई पहले मसीह के विरोधी थे, उनके बच्चे बीमारी से ठीक होने से अब प्रभु यीशु पर विश्वास करने लगे।
3. सरसबती, अनीता के मन को परमेश्वर ने बदला दिया, अब वे प्रभु यीशु पर विश्वास करने लगे।
4. बिघवन पहले प्रभु को नही जानती थी, प्रार्थना सभा में निरन्तर आने एवं वचन सुनने से प्रभु को जानने लगी।
5. नीलेश को शैतान ने पकड़ा था, जिसके कारण से पागल हो गया था, लेकिन प्रार्थना के माध्यम से उसे छुटकारा मिला।
6. सुरेश के जीवन में परिवर्तन आने का कारण उसके लगातार प्रभु की वचन सुनने से आया और अब वह बपतिस्मा लेने के लिये तैयार है।
7. सुकवनी के गुप्तांग में जलन से पीड़ित थी। प्रार्थना से उसे चंगाई मिली।
8. महेश भान्डे दुष्ट आत्मा से पीड़ित थी, प्रार्थना के माध्यम से उसे छुटकारा मिला।
9. रानीबाई तीन वर्ष से कमर दर्द से पीड़ित थी, प्रार्थना से उसे चंगाई मिली।
10. फूलमतबाई के पेट में बच्चा मर गया था, प्रार्थना के माध्यम से बच्चा बाहर आ गया।
11. मिश्न फिल्डों में बिना किसी रूकावटें से सेवकाई कर पायें।
12. नये कलीसियाओं में प्रचार करने के लिये परमेश्वर ने मार्ग खोलकर दिया।
13. सेवकाई की सारी आर्थीक जरूरतें प्रभु परमेश्वर ने पूरा किया।
14. परमेश्वर ने बड़े सामर्थ्य एवं अधिकार के संग उपयोग किया।
15. सुरक्षा एवं आरोग्यता के संग सेवा करने में परमेश्वर ने मद्द की।

प्रार्थना का निवेदन

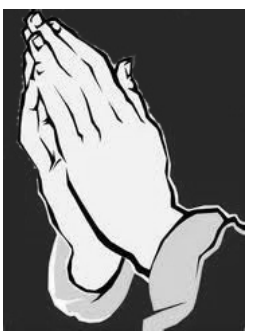

1. बपतिस्मा के लिये 15 लोग तैयार है, इन लोगों का बपतिस्मा बिना किसी रूकावट से होनें।
2. नागेशर और अमरीका – इन दोनों के घुटनों में दर्द है। वे दोनों ठीक होने।
3. कोमल और अंजू के पेट में हमेशा गैस बनता रहता है, उनकी चंगाई होने।
4. मोना और अन्नू को हमेशा सिर में दर्द बना रहता है, उनकी चंगाई होने।
5. ममता, अबी, ब्यूला को अच्छा वर मिलने के लिये प्रार्थना करें।
6. भूविंशन के गले में कुछ जला जैसा लगता है, उसकी चंगाई होने।

7. तैसी को यूरिन इनफेंक्शन हो गया है, उसकी चंगाई होने।
8. चंदा बर्मन की रिढ़ की हड्डी सुख गई है, जिसके कारण से वह उठकर चल फिर नही सकती है। प्रार्थना करें की वह फिर से उठकर अपने दायित्व कर सकें।
9. पामगढ़ बलाक के अधिकारीगण एवं विधायक सही सलाह लोगों को देने के लिये प्रार्थना करें।
10. सतनामी समाज के अध्यक्ष मसीहियों को सताने है, उनके मन परिवर्तन होने।
11. भग्भी की पैर की हड्डी टूट गई है, उसकी जल्द से ठीक होने के लिये प्रार्थना करें।
12. गीता के कमर में दर्द बना रहता है, उसको चंगाई मिलने के लिये प्रार्थना करें।
13. सुभाष के दोनों पैरो में दर्द बन रहता है, उसकी चंगाई के लिये प्रार्थना करें।
14. रानू और विश्वास बंजारे के कान में दर्द हमेशा बना रहता है, उनकी चंगाई के लिये प्रार्थना करें।
15. राविन के पेट में तीन महिनों से दर्द बना रहता है, उसकी चंगाई के लिये प्रार्थना करें।
16. जयश्री के चार छोटे–छोटे बच्चें है और इतवार के दो बच्चे है, इन दोनों के पति नहीं है। वे अपने बच्चों की परवरिश अच्छे ढंग से करने के लिये और उन्हें आर्थीक श्रोत मिलते रहें।
17. रोंगोबती के बच्चे उसकी बातें नहीं मानते है, उसकी आर्थीक स्थिति ठीक नही है। प्रार्थना करें कि उसके बच्चे उसकी बातें मानें और आर्थीक स्थिति ठीक हो जायें।
18. झलक वैष्ठन के ब्रेन ठीक से कार्य नही कर रहा है, उसका ब्रेन ठीक होने।
19. दिनेश बैष्णव के पूरे परिवार प्रभु को ग्रहण करने के लिये प्रार्थना करें।
20. हीरा लाल यादव और गिरजा को लकुवा हो गया है, उनकी चंगाई के लिये प्रार्थना करें।
21. सोम 5 वर्ष का बच्चा है, वह बोल नही पाता है। वह अच्छे से बोलने के लिये प्रार्थना करें।
22. अमन को पत्थरी हो गई है, उसको छुट्कारा मिलने के लिये प्रार्थना करें।
23. हरिश रात में सोते वक़्त शैतान उसे परेशान करता है, और उसके शरीर में नाखून से खरोच का निशान दिखाई देता है। हरिश की छुट्कारे के लिये प्रार्थना करें।
24. विश्वास के शरीर में खुजली हो गई है, उसकी चंगाई के लिये प्रार्थना करें।
25. मेंहु गाँव के मुख्यिाओं के जीवन में परिवर्तन आने के लिये प्रार्थना करें।
26. रमायण बाई एक वर्ष से बीमार है, उसकी चंगाई के लिये प्रार्थना करें।
27. भदरहिन और हिरौदी – इन दोनों के पति शराबी है, उनकी शराब की आदत छुट्ने।
28. लीला विश्वास में सही रीति से बढ़ने के लिये प्रार्थना करें।
29. श्याम लाल साहु ने खेत की शासकीय जमीन को घेर रखा है, और आने जाने वालो को रास्ता नही देता है। उसका मन फिराव के लिये प्रार्थना करें।
30. अन्नुलता को मिर्गी हो गई है, उसकी चंगाई के लिये प्रार्थना करें।
31. करेगाँव, मेनगुडा और मेंहु भाट में प्रार्थना भवन बनने के लिये प्रार्थना करें।
32. जितने भी मसीही विरोधी है, उनके अंदर मन में परिवर्तन आने के लिये प्रार्थना करें।
33. मिश्न फिल्ड़ों में सम्पर्क आने वालों के जीवन में मन परिवर्तन आने के लिये प्रार्थना करें।
34. सेवकाई की आर्थीक जरूरतें पूरी होने के लिये प्रार्थना करें।
35. प्रार्थना योद्धाओं, पाठकों, दान–दाताओं, सेवकों और मिशनेरी की आरोग्यता, सुरक्षा, उन्नति एवं आशीष के लिये प्रार्थना करें।

प्रार्थना का विषय

1. अन्धविश्वास देश भर से समाप्त होने के लिये प्रार्थना करें।
2. देश भर की आर्थीक स्थिति सुधरने के लिये प्रार्थना करें।
3. बच्चों की सुरक्षा बनी रहने के लिये प्रार्थना करें।
4. महिलाओं के बीच में जागृति आने एवं उनकी सुरक्षा बनी रहने।
5. जल–तल–वायु सेनाओं में कार्यारतों की सुरक्षा एवं उन्नति के लिये प्रार्थना करें।
6. देश भर से बैरोज़गारी खत्म होने के लिये प्रार्थना करें।
7. अंताकवादीयों, उग्रवादियों, नक्शलवादियों के जीवन में परिवर्तन आने के लिये प्रार्थना करें।

सुसमाचार की सभायें
उपवासिक की सभायें
जागृति की सभायें
मिशनेरी भेजना
बाईबल टिचिंग
सेमिनार्स
पत्रिका
रेट्रिट्स
यूथ मिनिस्ट्री
सामाजिक चेतना
मध्यस्था की प्रार्थना
सेवकों को स्फूर्तिवान बनाना

आवश्यक प्रार्थना के लिये
Cell No. 09893141410, 08871452038

Printed Matter only

To,
Name _____
Address _____
_____

Return Requested to:
Post Box No.01
"DHAYA JOTHI"
Dhaya Ministries
Address: T8/510, Sagar Lake View Homes,Ayodhya Bye Pass Road, Piplani Post, Bhopal (M.P.) - 462022